नाम - ललिता कारम

कक्षा - B. Sc. I year

शा. शहीद बापुराव कॉलेज

सुकमा

जिला - सुकमा (छ. ग.)

ROLL NO. 44999

Scanned with ACE Scanner

जैविक घटक और अजैविक घटक सतत रूप से अन्तराकर्षित होते है। इस अन्तराकर्षण का मूल कारण है - जैविक समुदाय के बाह्य स्वाद्य ऊर्जा का प्रवाह। जर्मन प्राणिशास्त्री अर्निस्ट हैकल ने सर्वप्रथम इकोलाजी शब्द का प्रयोग किया इन्हे पारिस्थितिक तंत्र के जनक के रूप मे भी जाना जाता है।

"पारिस्थितिक तंत्र की अवधारणा गत्यात्मक (Dynamic) है न कि स्थैनिक। यह एक खुला तंत्र है। जिसमे प्राकृतिक कारणो से अथवा मानवीय हस्तक्षेप के कारण परिवर्तन आता रहता है।

पारिस्थितिक तंत्र के घटक :⇒

जैव तथा अजैव घटकों की अंतर्गत उत्पादक उपभोक्त तथा अपघटको को शामिल किया जाता है। उत्पादक वे होते है जो अपना भोजन स्वयं निर्मित करते है तथा स्वपोषित होते है। वे क्लोरोफिल से युक्त होते है।
स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र मे स्वपोषित शाक झाड़ि तथा वृक्ष जबकि गहरे जलीय परिस्थितिक तंत्र में फाइटोप्लाक्टन प्रमुख उत्पादक होते है

Scanned with ACE Scanner

उपभोक्ताओं को शाकाहारी, मांसाहारी तथा सर्वाहारी में वर्गीकृत करते है। उपभोक्ता जो भोजन के लिए पौधों पर निर्भर रहता है, उसे प्राथमिक उपभोक्ता या शाकाहारी तथा जो अन्य प्राणियों पर निर्भर होता है। उसे मांसाहारी कहते है।

जैव. शेर व बाघ :⇒

सर्वाहारी उपभोक्ता प्राथमिक एवं द्वितीयक उपभोक्ता से भोजन ग्रहण करते है जैसे मनुष्य / अपघटक परपोषी जीव होते है इसमे बैक्टीरिया व कवक को सम्मिलित करते है अजैव घटकों के अन्तर्गत मृत कार्बनिक पदार्थ (कार्बोहाइड्रेटस, प्रोटीन वसा तथा ह्यूमस तथा अकार्बनिक (नाइट्रोजन जल एवं CO_2) को सम्मिलित कहते है।

आहार श्रृंखला व आहार जाल :=

पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा का स्थानान्तरण श्रृंखलाबद्ध रूप से होता है। इसे आहार श्रृंखला कहा जाता है। आहार श्रृंखला में / हरे पौधे। उत्पादक होते है तथा इन उत्पादको पर उपभोक्ता आहार के लिए निर्भर होते है कुछ जीव सर्वभक्षी होते है। पारिस्थितिकी तंत्र की निरन्तरता के लिए आहार श्रृंखला अति आवश्यक है।

Scanned with ACE Scanner

जीवो की प्रजातियो द्वारा अनेक प्रजातियो से भोजन प्राप्त करने के कारण आहार शृंखला मे जटिलता आ जाती है। जिसके फलस्वरूप आहार जाल का निर्माण होता है।

पारिस्थितिक तंत्र में आहार शृंखला में जितनी अधिक जटिलता होगी अर्थात जैविक विविधता जितनी अधिक होगी, पारिस्थितिक उतनी अधिक होगी।

विभिन्न पर्यावरणीय दशाओं वाले पारिस्थितक तंत्र में एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर में ऊर्जा का स्थानांतरण भिन्न-भिन्न होता है। यह सामान्य 5% से 20% तक होता है। स्थलीय पारिस्थितिक तंत्रों में एक स्तर से दूसरे में औसतन 10% ऊर्जा का ही स्थानांतरण हो पाया है। इसे 10% का नियम भी कहते हैं।

जीवों की जाति और पर्यावरणीय दशाओं के लिए पारिस्थितिक तंत्रो में आहार शृंखला का निर्माण होता है।

पारिस्थितिक तंत्र पर मानवीय प्रभाव

प्रत्येक पारिस्थितिक तंत्रों में अलग-अलग प्रकार के खाद्य प्रवाह और आंतरिक अधिवासीय विशेषताएँ होती है। लेकिन मानव के विध्वंसकारी द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से पारिस्थितिक

Scanned with ACE Scanner

पारिस्थितिक तंत्र की संरचना

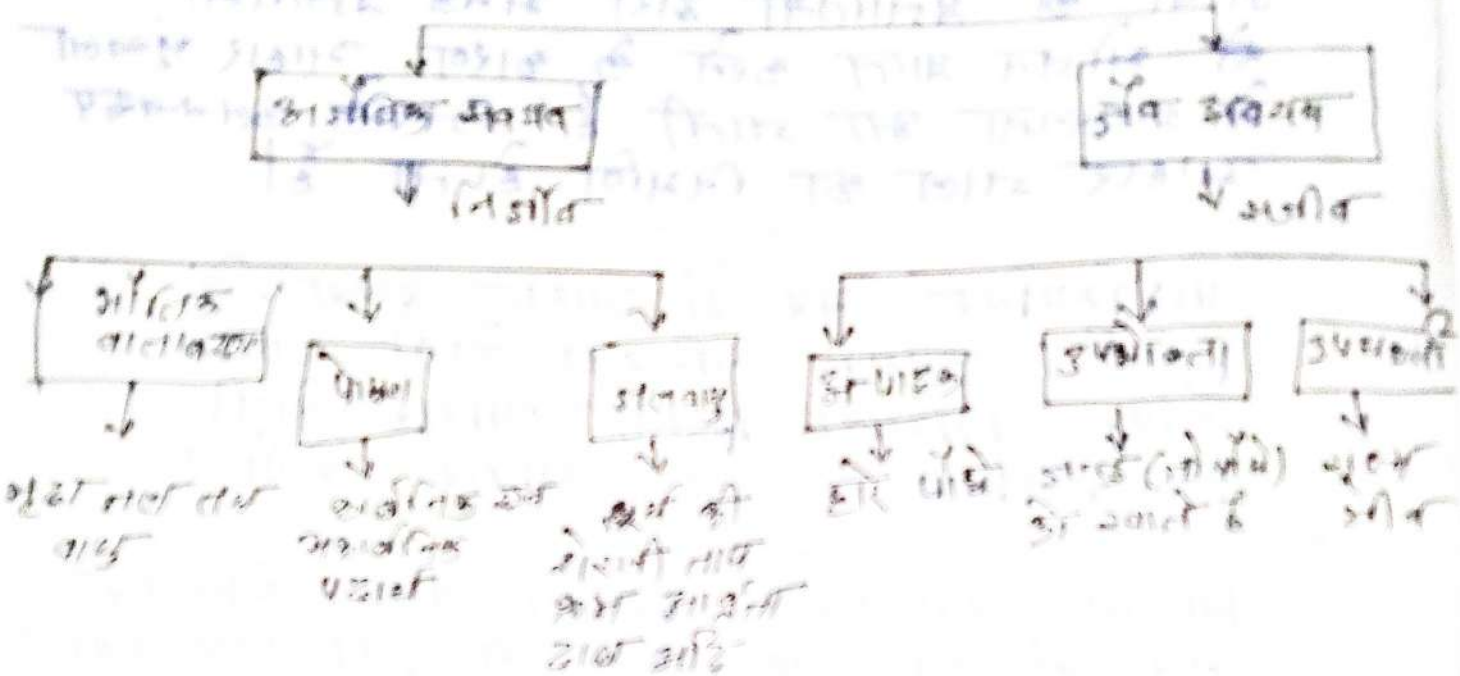

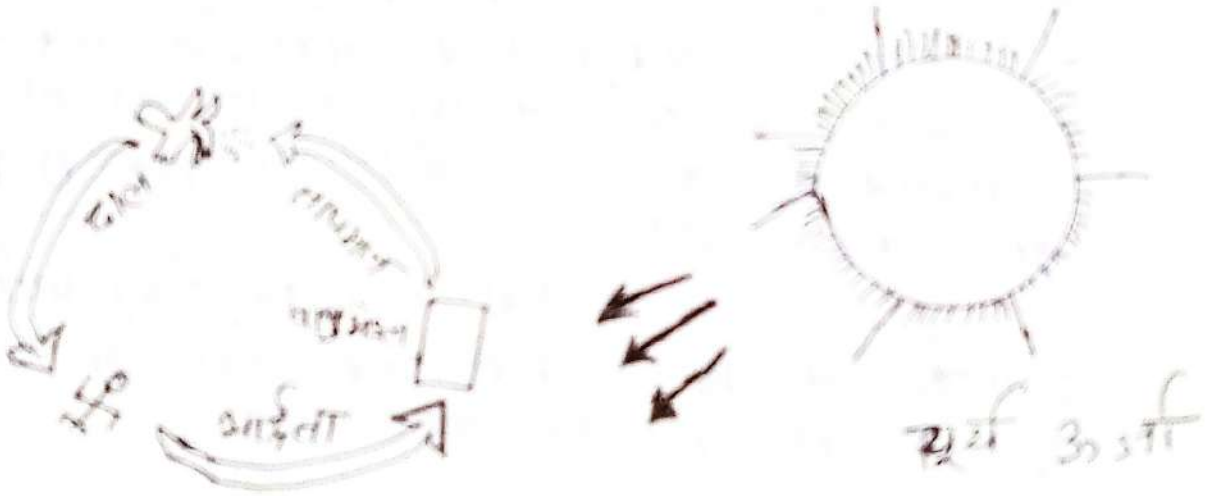

चित्र – पारिस्थितिक तंत्र की संरचना

SUBJECT.....

DATE.....

नियमों के विपरीत इनसे पदार्थ व ऊर्जा का अत्यधिक दोहन किया है परिणाम मनुष्य की आयु, कार्यिक क्षमता और खाद्य उपलब्धता में तो वृद्धि हो गई किन्तु अन्य जीवों पर इसका प्रतिशत प्रभाव पड़ा और विश्व के लिए अनेक भागों में पारिस्थितिक असंतुलन की समस्या उत्पन्न हो गई।

बढ़ते तापमान ओजोन छिद्र अम्लीय वर्षा और ग्रीन हाउस प्रभाव आदि के कारण सम्पूर्ण जीवनदायिया पारिस्थितिक तंत्र तेजी से असंतुलन हो रहे। अनेक जीवों का विनाश हो चुका है और अनेक विनाश के कगार पर खड़े है।

मानवीय जनसंख्या की विस्फोटक वृद्धि स्थिति ने पारिस्थितिक पिरामिड पर आ खड़ा है जिससे खाद्य श्रृंखला असंतुलन हो रहा है। इनसे पारिस्थितिक असंतुलन की समस्या उत्पन्न हुई है।

इन्हें प्रमुख वर्गों में रखकर देखा जा सकता है -

(1) स्थलीय वातावरण से संबंधित समस्याएँ →

इनके अन्तर्गत वनों का विनाश, मृदा-क्षरण मृदा प्रदूषण मृदा में लवणता व क्षारीयता की वृद्धि भूमिगत जल में हास की समस्या आती है

Scanned with ACE Scanner

पर्यावरणीय सन्तुलन के लिए पर्वतीय क्षेत्रो के 60% एवं मैदानी क्षेत्रो के 20% भाग मे वन का होना आवश्यक है

कुल मिलकर सम्पूर्ण स्थल के 33% क्षेत्रफल पर वन होने आवश्यक है जबकि यह वैसिक वन) वन संसाधन आकलन (GFRA) 2010 के अनुसार 35% भू-भाग पर है। इस प्रकार विश्व में औसत वन क्षेत्र प्रायः आपेक्षा अनुसार है। परन्तु इनका वितरण अत्याधिक असमानता कि के लिए है।

उदा :- दक्षिण एशियाई क्षेत्र वन आवरण कुल भौगोलिक क्षेत्र का मात्रा 19% है।

"भारत में भी GFRA-2010 के अनुसार सिर्फ 23% है। भूमि प्रदूषण व नगरीय कचरे के कारण जलीय प्रदूषण की समस्या भी गंभीर हुए है। सेर बॉरेज, राइन गंगा, यमुना आदि नदियां प्रदूषण से अधिक ग्रस्त नदियों है।

वायुमण्डलीय वातावरण से संबंधित समस्याएँ ⇒

जीवाश्मी ऊर्जा के अत्यधिक प्रयोग वनो के तीव्र विनाश परिवहन साधनों के उपयोग में भारी वृद्धि आदि के कारण वैश्विक जलवायु परिवर्तन देखने को मिले है।

Scanned with ACE Scanner

वायुमण्डलीय वातावरण से संबंधित असंतुलन मुख्य तीन प्रकार के है —

ओजोन छिद्र ⇒

समताप मंडल में पाई जाने वाली ओजोन परत को जीवन रक्षक छतरी कहा अवशोषित हो जाता है। क्योंकि यह सूर्य पराबैंगनी किरणों को अवशोषित करती है। इन किरणों से आँखो के रोग होने का खतरा रहता है। तथा कृषि व जलवायु पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। ओजोन परत से सूर्य की पराबैंगनी किरणो को 70 से 90% तरंगे छन जाती है।

ओजोन परत मे छेद सर्वप्रथम फारमेन द्वारा 1973 ई. मे अंटार्कटिका मे देखा गया था। अंटार्कटिका क्रियाओं मे देखी जाती है। डाबसन मीटर से ओजोन की सघनता या सान्द्रता मापा जाता है। अंटार्कटिका के वायुमंडल मे ओजोन की सान्द्रता 220 डॉबसन यूनिट से कम हो जाने पर ओजोन परत में छिद्र होने का प्रमुख कारक क्लोरीन है। इसकी उत्पत्ति क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFC) हाइड्रोफ्लोरो कार्बन HFC हैलोजेन्स, कार्बन टेट्राक्लोरीन मिथाइल क्लोरोफार्म व मिथाइल ब्रोमाइड जैसे रसायनों में होती है।

Scanned with ACE Scanner

वैज्ञानिक के अनुसार क्लोरीन का एक अणु ओजोन के 1 लाख अणुओं को तोड़ सकता है। रेफ्रिजरेशन एयर कंडीशनियों स्कैनर प्लास्टिक आदि।

'ओजोन विवरणीय' का वैज्ञानिक आकलन 2018 की रिपोर्ट के अनुसार ओजोन गैस की सुरक्षात्मक परत के नाश होने का क्रम अब लगभग बंद हो गया है तथा ओजोन छिद्र का आकार अब धीरे-धीरे छोटा हो रहा है।

एक नए ओजोन छिद्र का पता आर्कटिक सागर के ऊपर चला है जिसका प्रतिकूल प्रभाव उ. गोलार्द्ध में होने की आशंका है। ओजोन परत में बढ़ते छिद्र को रोकने के लिए 1987 में मांट्रियल किया गया था। जिसमें में कटौती हेतु विभिन्न राष्ट्रों सहयोग की गई थी।

भूमण्डलीय तापन ⇒

औद्योगिक क्रांति के बाद से वायुमण्डल में कार्बनडाई ऑक्साइड (CO_2), कार्बनमोनो ऑक्साइड CO, मीथेन जल, क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFC) आदि ग्रीन हाउस गैस की मात्रा में तीव्र वृद्धि हुई है।

यह भारी गैस है एवं वायुमण्डल की पार्थिव विकिरण के लिए क्लोरोकार्बन में सर्वाधिक है परन्तु भूमण्डलीय तापन के लिए मुख्यतः क्योंकि विभिन्न ग्रीन हाउस गैस में इनकी मात्रा सर्वाधिक है।

यदि वायुमण्डल में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा इसी तरह बढ़ती है तो 1904 ई की तुलना में 2030 ई में विश्व के तापमान में 3c की वृद्धि हो जाएगी मण्डलीय तापमान के कारण हिम शीत पिघलेगी जिसके परिणाम स्वरूप समुद्री जलस्तर 2.5 से 3 मी तक बढ़ हो जाएगा।

यद्यपि ग्रीन हाउस प्रभाव उत्पन्न करने की तीव्रता क्लोरोफ्लोरो कार्बन से सर्वाधिक है परन्तु भूमण्डलीय तापन के लिए मुख्यतः कार्बन डाई ऑक्साइड जिम्मेदार है क्योंकि विभिन्न ग्रीन गैसों में इनकी मात्रा सर्वाधिक है।

Scanned with ACE Scanner

Page No.

Roll No.

Date

शासकीय शहीद बापूराव महाविद्यालय, सुकमा

जिला :- सुकमा (छ.ग.)

नाम :- प्रियांशु गुप्ता

कक्षा :- बी.एस.सी. प्रथम वर्ष (Maths)

विषय :- पर्यावरण अध्ययन

रोल नं० - 45067

Scanned with ACE Scanner

प्रयोजन कार्य - I

1. नदी का नाम :- 'महानदी' महानदी छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा आंचल की सबसे बड़ी नदी है। जलक्षमता के आधार पर गोदावरी के बाद दूसरी सबसे बड़ी नदी है। सहायक नदियाँ बाये तरफ से शिवनाथ हसदेव, माँड, ईब, अरपा, दाये तरफ सोंढुर, पैरी, ओंग, जोंक, जो आदि।

2. उद्गम स्थान :- महानदी रायपुर के समीप धमतरी जिला के नगरी विकासखंड के सिहावा के सिंगी ऋषि पहाड़ से निकला है। यह नदी फाल्स फॉइन्ट के निकट बंगाल की खाड़ी में गिरती है महानदी छत्तीसगढ़ और उड़ीसा राज्य में बहती है। महानदी किनारे बसे नगर (1) छत्तीसगढ़ राज्य में - कांकेर चारामा धमतरी, रायपुर, सिहपुर, राजिम, चम्पारण, आरंग, बिलासपुर शिवरीनारायण, (2) उड़ीसा राज्य मे,- सम्बलपुर जिले मे प्रवेश के साथ ही महानदी छत्तीसगढ़ से विदा लेती है महानदी अपना आधे से अधिक रास्ता छत्तीसगढ़ में ही तय करती है। महानदी पर बने प्रमुख बाँध हीरा कुण्ड बाँध सम्बलपुर उड़ीसा। यह भारत का 1 सबसे लंबा डैम है। इसकी लम्बाई 4.8 किमी है प्रमुख बाँध 2 रुद्री बांध, 3 गंगरेल बाँध

Scanned with ACE Scanner

Roll No.

Date

3. नदी की गहराई चौड़ाई :- महानदी की लम्बाई लगभग 900 किमी चौड़ाई 24 किमी इसकी घटती बढ़ती रहती है इस नदी की गहराई 80 फीट तक होती है।

महानदी का धार्मिक महत्व एवं महानदी किनारे बसे धार्मिक स्थल - राजिम में प्रयाग की तरह महानदी का सम्मान है हजारो लोग यहा स्नान करने के लिए पहुँचते है शिवरी नारायण मे श्री भगवान जगन्नाथ की कथा है। गंगा के समान पवित्र होने के कारण महानदी के तट पर अनेक धार्मिक सांस्कृतिक, ललित कला के केन्द्र है। सिरपुर, राजिम, मल्हार खरौद, शिवरी नारायण चन्द्रपुर सम्बलपुर प्रमुख नगर है। सिरपुर में गंधेश्वर रुद्री मे - रुद्रेश्वर राजिम में - राजीव लोचन और कुलेश्वर मल्हार पातालेश्वर, खरौद मे लक्ष्मणेश्वर शिवरी नारायण में - भगवान नारायण चंद्रचुड महादेव महेश्वर, महादेव, अन्नपूर्णा, देवी, लक्ष्मी नारायण श्रीराम लक्ष्मण जानकी और जगन्नाथ बलभद्र और सुभद्रा का भव्य मंदिर है। गिरौद में - गुरु घासीदास पीठ परी तुरतुरिया मे :- लव कुश की जन्मस्थली बाल्मिकी आश्रम, चन्द्रपुर मे माँ चन्द्रसेनी, सम्बलपुर मे समलेश्वरी देवी। इसी कारण इन्हे छत्तीसगढ़ में काशी और प्रयाग के समान मोक्षदायी माना गया है शिवरीनारायण में भगवान नारायण की चरण को स्पर्श करती हुई रोहिणी कुण्ड है। जिसके दर्शन और जल आचमन करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है

Scanned with ACE Scanner

Roll No.

Date

4. जल की उपलब्धता :- महानदी के पानी का उपयोग बिजली उत्पादन में, सिन्चाई में खेतो में मवेशियों एव जीव-जन्तुओं द्वारा पीने मे तालाब में सिंचाई करने मे साथ ही मछली पालन मे, पानी पीने में किया जाता है। महानदी का उपनाम नीलोत्पला, चित्रोत्पला, छत्तीसगढ की गंगा, मंदवाहिनी महानदी उड़ीसा का शोक कहा जाता है।

5. नदी के जल में उपस्थित जन्तु एव वनस्पति :- मछली केकड़ा जोक, सॉप मगरमच्छ, कछुआँ, झींगा, दरियागोडियाँ झींगा, मछली, सीप, बाम मछली, कैट फिश मेंढक मगरमच्छ आदि जीव उपस्थित होते है महानदी के जल मे कुल हरे-पीले छितरे हुए पत्ती वाले पौधे जल के नीचे उगते है जैसे डाड्डा कुछ फूले हुए मिलेगे जैसे जल कुम्भी। इसके अलावा आपके परिचित कमल, कुमुदिनी और सिंघाड़े के पौधे भी मिलेगे जिनका आधा भाग पानी में डूबा हुआ और आधा सतह से ऊपर उठा हुआ रहता है

ज्वारीय वन या मैंग्रोव वन :-

(i) भारत में तटीय क्षेत्रों मे जहाँ नदियों मे अपना डेल्टा बनाया है वहा ये वृक्ष पाये जाते हैं।

(ii) क्षेत्र - गंगा नदी का डेल्टा, महानदी का डेल्टा, कृष्णा नदी का डेल्टा, कावेरी का डेल्टा तथा गुजरात में कुछ भाग में पाये जाते हैं।

Scanned with ACE Scanner

Date

(iii) क्योंकि गंगा- ब्रह्मपुत्र डेल्टा का अधिकांश भाग बांग्लादेश के अधीन आता है अतः भारत में मैंग्रोव वनों की सबसे अधिक मात्रा गोदावरी में पायी जाती है उसके बाद आन्ध्र प्रदेश में गोदावरी तथा कृष्णा नदी

(iv) अधिकतर पूर्वी तट पर पाये जाते है। कुछ मैंग्रोव वन गुजरात में बल्कि ज्वारीय क्षेत्र में पाये जाते है अतः उन्हें ज्वारीय वन कहा जाता है

(V) वनस्पति - मैंग्रोवा, सुंदरी, कैसूरीना, फॉनिक्स

6 नदी जल में प्रदूषण का स्तर :- जब झीलें नहरों नदियों समुद्र तथा अन्य जल निकायों मे विषैले पदार्थ करते हैं और यह इनमें जाते हैं अथवा पानी मे पड़े रहते है या नीचे इकट्ठे हो जाते है। जिसके परिणामस्वरूप जल प्रदूषित हो जाता है और इसमें जल की गुणवत्ता में कमी आ जाती है तथा जलीय परिस्थितिकी प्रणाली प्रभावित होती है। इसे जल प्रदूषण कहते है

जल प्रदूषण का मुख्य कारण मानव या जानवरों की जैविक या फिर औद्योगिक के फलस्वरूप पैदा हुये प्रदूषकों को बिना किसी समुचित उपचार के सीधे जल धारायों में विसर्जित कर दिया जाना है। जल मे विभिन्न प्रकार के हानिकारक पदार्थों के मिलने से जल प्रदूषण होता है।

Scanned with ACE Scanner

HERBARIUM PAPER

Name. CHANCHAL NAG

Class. B.SC II[nd] Year Section. "A"

Roll No. 52392

School Govt. Shaheedbapurao P.G. College Sukma

Scanned with ACE Scanner

INDEX

S.No.	Name/Biological Name	Subject	Topic	Date of Collection	Sheet No.
①	Ocimum sanctum			29/09/2022	01
②	Catharanthus roseus			29/09/2022	02
③	Jasminum officinale			30/09/2022	03
④	Tinospora cordifolia			01/10/2022	04
⑤	Citrus limon			01/10/2022	05
⑥	Syzygium cumini			01/10/2022	06
⑦	Thuja standishii			01/10/2022	07
⑧	Hibiscus rosa-sinensis			02/10/2022	08
⑨	momordica charantia			02/10/2022	09
⑩	Murraya koenigii			02/10/2022	10
⑫	Cicer species			02/10/2022	11

Remarks _____

Teacher's Signature _____

Scanned with ACE Scanner

I N D E X

S.No.	Name/Biological Name	Subject	Topic	Date of Collection	Sheet No.
(13)	Emblica officinalis			03/10/2022	12
(14)	Azadirachta indica			03/10/2022	13
(15)	Punica granatum			03/10/2022	14
(16)	chrysanthemums.			06/10/2022	15
(17)	Curcuma longa			10/10/2022	16
(18)	Cinnamomum tamala			12/10/2022	17
(19)	Rosa Rubiginosa			14/10/2022	18
(20)	Oryza Sativa			17/10/2022	19
(21)	kalanchoe Pinnata			20/10/2022	20
(22)	Asparagus racemosus			25/10/2022	21

Sketan 18/10/2022

Sketan 05/11/2022

Scanned with ACE Scanner

classification

Division – Phanerogams
class – Dicotyledons
order – Lamiales
Genus – Ocimum
species – O. tenuiflorum

Charecter :–

1. तुलसी एक द्विबीजपत्री तथा शाकीय औषधीय पौधा है।
2. तुलसी का पौधा हिंदू धर्म में पवित्र माना जाता है।
3. इसे लोग अपने घर के आंगन में लगाते है।
4. भारतीय संस्कृति के चिर पुरातन ग्रंथ वेदो में भी तुलसी के गुणो का वर्णन मिलता है।
5. यह रोग से एक हर्बल चाय के रूप मे विशेष रूप से, जो अतिरिक्त पर आयुर्वेद में उपयोग किया जाता है।
6. तुलसी के पत्तियो में वाष्पशील सुगंधयुक्त तेल पाया जाता है।

Uses :–

1. तुलसी की पत्तियों का उपयोग सर्दी, खांसी, ब्रोंकाइटिस (दम फूलना) आदि में किया जाता है।
2. इसके तेल के मालिश से मच्छरो के काटे जाने से बचा जा सकता है।
3. तुलसी के जड़ो का उपयोग, बुखार को कम करने के लिए किया जाता है।
4. तुलसी के पत्तो के रस का सेवन बच्चो में पेट दर्द, दस्त आदि मे लाभ पहुंचाता है।
5. तुलसी के पत्तो को खाने व कुष्ठ (Leprosy) रोग धब्बों (spot) पर मलने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।
6. तुलसी के पत्तो को काली मिर्च के साथ खाने से मलेरिया बुखार पुनः नही चढ़ता है।

Scanned with ACE Scanner

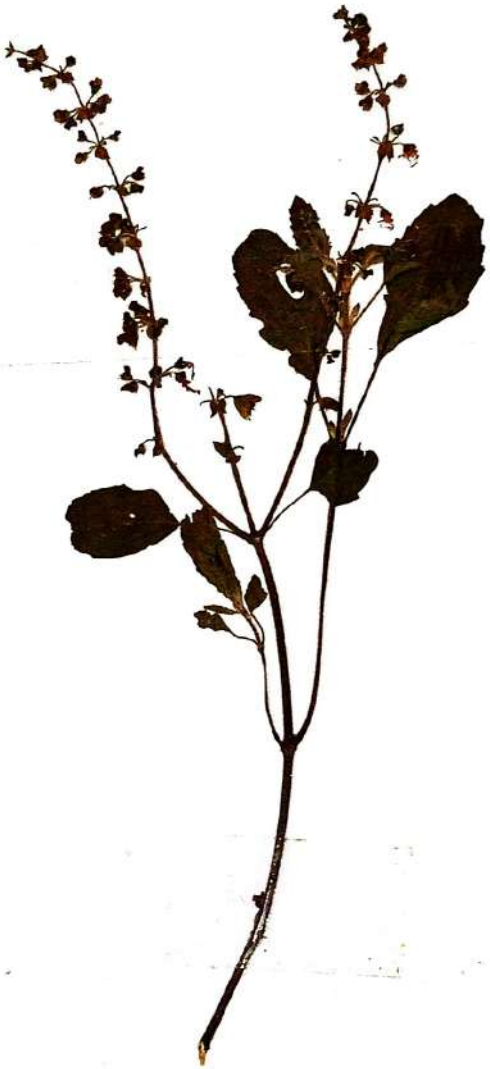

Roll No. ....

Serial No - 1

Botanical Name - Ocimum Sanctum

Common Name - carum

Family - Labiatae

Place of Collection - Sukma

Name of Collection - Chanchal Na

Date of collection - 29-9-2022

Habit - Herb

Ocimum Sanctum (तुलसी)

Scanned with ACE Scanner

Roll No. .....

S. No – 2

Botanical Name - Catharanthus roseus

Common Name - Vika Rosa

Family - Apocynaceae

Place of Collection - Sukma

Name of Collection - chanchal Nag

Date - 29-9-2022

Habit - Shrubs

Catharanthus roseus (सदाबहार)

Scanned with ACE Scanner

Division – Phanerogams
Class – Dicotyledons
Sub-Class – Gamopetalae
Order – Gentianales
Genus – Catharanthus George don
Species – Madagascar Periwinkle

Character :–

① वैसे तो यह झाड़ी इतनी जानदार है कि बिना देखभाल के भी फलती-फूलती रहती है।
② रेतीहार दोमट मिट्टी में थोड़ी-सी उपोरूत खाद मिलने पर आकर्षक फूलों से लदी-फदी रहती है।
③ सदाबहार का सौंदर्य किसी के भी हृदय को प्रफुल्लित कर सकता है।
④ इसके फल बहुत से बीजों से भरे हुए गोलाकार होते हैं।
⑤ यह पौधा अफ्रीका महाद्वीप के मेडागास्कर देश का मूल निवासी है।

Uses :–

① सदाबहार एकवर्षीय या बहुवर्षीय शाकीय वनस्पति है।
② सदाबहार की पत्तियाँ विघटन के दौरान मृदा में उपस्थित हानिकारक रोगाणुओं को नष्ट कर देती है।
③ यह औषधीय गुण सम्पूर्ण पौधे में पाया जाता है लेकिन इसके जड़ो की हाल औषधीय दृष्टिकोण से सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है।
④ सदाबहार की जड़ो में रक्त शर्करा को कम करने की विशेषता होती है।
⑤ पौधे का उपयोग मधुमेह के उपचार में किया जा सकता है।
⑥ जड़ का उपयोग उदर टानिक के रूप में भी होता है।

Scanned with ACE Scanner

classification —

Order — Lamiales
Family — Oleacae
Genus — Jasminum
Species — J. officinale

Charecter :—

1. एक फूल देने वाला पौधा है । जो दक्षिण एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया का देशज
2. मोगरे का लैटिन नाम जेसमिनम सेमलेक है ।
3. मोगरे का फूल से सुगंधित फूलो की माला और गजरे तैयार किये व पहने जाते है ।
4. इस की फूल का रंग सफेद रंग का होता है।
5. स्वभाव मोगरा के फूलो की प्रकृति गर्म होती है ।

Uses :—

1. इस फूल का रस कान के दर्द में भी किया जाता है।
2. यह मुंह और आंखो के रोगो में लाभ देता है।
3. जैसे - जैसे गर्मी बढ़ती है, इसकी सुगंध आपको गर्मी के अहसास से दूर रखती है ।
4. इसकी महक से तन और मन को ठंडक का अहसास होता है ।
5. इसे संस्कृत में 'मालती' तथा 'मल्लिका' कहते है ।

Scanned with ACE Scanner

Roll No. .....

Sesidi No-3

Botanical Name - Jasminum officinale

Common Name - Jasmine

Family - oleaceae - olives

Place of collection - Sukma

Name of collection - chanchala

Date of collection - 30-9-2022

Habit - Herbs

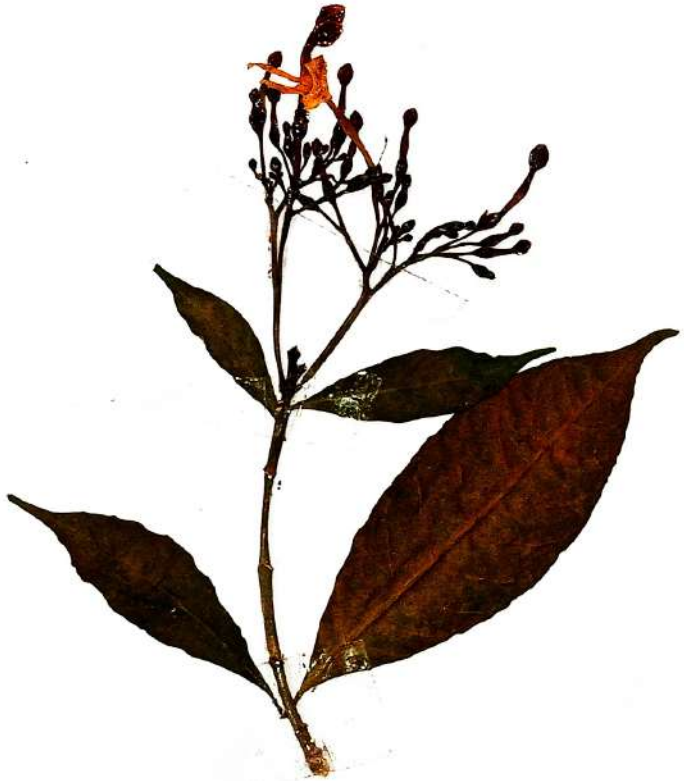

Jasminum officinale (दुधमोंगरा)

Scanned with ACE Scanner

Roll No. ....

Serial No – 4

Botanical Name – Tinospora cordifolia

Common Name – Guchchh, Giloy

Family – Menispermaceae

Place of calletion – Sukma

Name of callection – chanchal Nag

Date of calletion – 1-10-2022

Habit – Multi year Plant

Tinospora Cardifolia (गिलोय)

Scanned with ACE Scanner

Classification —

Order — Ranunculales
Family — Menispermaceae
Genus — Tinospora
Species — T. Cordifolia

Charecter :—

1. इसके पत्ते हृदय के आकार के होते है।
2. पत्ते खाने के पान जैसे एकांतर क्रम में व्यवस्थित होते है।
3. ये लगभग 2 से 4 इंच तक व्यास के होते है।
4. स्निग्ध होते है तथा इनमें 7 से 9 नाड़ियां होती है।
5. पत्र - डण्ठल लगभग 1 से 3 इंच लम्बा होता है।
6. आयुर्वेद में इसको कई नामों से जाना जाता है जैसे — अमृत, गुडुची, छिन्नरुह, चक्रांगी आदि।

Uses :—

1. गिलोय शरीर की प्रतिरक्षा (Immunity) को बढ़ाता है।
2. यह शरीर में एन्टीबॉडी उत्पादक कोशिकाओं की संख्या में भी यह वृद्धि करता है।
3. यह हड्डियों, फेफड़ों, आंत के संक्रामक रोगों के उपचार में काम आता है।
4. गिलोय का काढ़ा गुर्दे एवं हृदय के लिए अच्छा होता है।
5. गिलोय से बार-बार आने वाले बुखार तथा यकृत के विकारों को ठीक करता है।
6. यह शरीर में इन्सुलिन के उत्पादन में सहायक होता है तथा शरीर के ग्लूकोज का उपयोग करने की क्षमता बढ़ाता है।
7. यह धमनियों व हृदय में होने वाली रुकावटों को साफ करता है।

Scanned with ACE Scanner

classification —

Division — Phanerogams
Class — Dicotyledons
Sub-Class — Polypetalae
Order — Geraniales
Genus — Citrus
Species — C. limon

Characters :—

1. नींबू छोटा पेड़ अथवा सघन झाड़ीदार पौधा है।
2. इसकी शाखाएं कांटेदार, पत्तियाँ होती, डंठल पतला तथा पत्तोदार होता है।
3. फूल की कली छोटी और मझली रंगीन या बिल्कुल सफेद होती है।
4. प्रारूपिक (टिपिकल) नींबू गोल या अंडाकार होता है।
5. छिलका पतला होता है, जो गूदे से भली भांति चिपका रहता है।
6. गूदा पांडुर हरा, अम्लीय तथा सुगंधित होता है।

Uses :—

1. नींबू के सेवन करने से वजन कम होता है।
2. शरीर की इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए नींबू का उपयोग करना चाहिए।
3. नींबू पानी सेवन करने से डिहाइड्रेशन की समस्या नहीं होती।
4. नींबू में सिट्रिक एसिड (citric acid) मौजूद होता है। जो किडनी स्टोन में लाभदायक है।
5. ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करता है।
6. इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-माइक्रोबियल गुणों से भी समृद्ध है, जो रक्त को साफ करता है।
7. ये पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है।

Scanned with ACE Scanner

Roll No. ....

S. No - 5

Botanical Name - Citrus limon

Common Name - Citrus limon

Family - Rutaceae

Place of collection - Sukma

Name of collection - chanchal

Date of calletion - 1-10-202

Habit - Shrubs

Citrus limon (नींबू)

Scanned with ACE Scanner

Roll No. .....

Seedi No. - 6

Botanical Name - Syzygium cumini

Common Name - Jamun

Family - Myrtaceae

Place of collection - Sukma

Name of collection - Chanchal Nag

Date of collection - 1.10.2022

Habit - Tree

Syzygium Cumini (जामुन)

Scanned with ACE Scanner

Classification —

Order – Myrtales
Family – Myrtaceae
Genus – Syzygium
Species – S. cumini

Character :-

1. जामुन के पेड़ का वानस्पतिक नाम सिज़गियम कुमिनि है. इसे विभिन्न घरेलू नामों जैसे – जामुन, जाम, काला जामुन, ब्लैकबेरी आदि है।
2. प्रकृति में यह अम्लीय और कसैला होता है।
3. स्वाद मीठा होता है।
4. अम्लीय प्रकृति के कारण सामान्यतः इसे नमक के साथ खाया जाता है।
5. जामुन का फल 70 प्रतिशत खाने योग्य होता है।
6. इस फल में खनिजों की संख्या अधिक होती है।

Uses :—

1. इस फल के बीज में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और कैल्शियम की अधिकता होती है।
2. यह आयरन आयरन का बड़ा स्रोत है। प्रति 100gm में एक से दो मिग्रा आयरन होता है।
3. इसमें विटामिन बी, कैरोटिन, मैग्नीशियम और फाइबर होते हैं।
4. जामुन को मधुमेह के बेहतर उपचार के तौर पर जाना जाता है।
5. पाचन शक्ति मजबूत करने में जामुन काफी लाभकारी होता है।
6. लिवर से जुड़ी बीमारियों के बचाव में जामुन रामबाण साबित होता है।
7. इसके फल में खून को साफ करने वाले कई गुण होते हैं।

Scanned with ACE Scanner

Classification –

Division – Pinophyta
Class – Pinopsida
Order – Pinales
Family – Cupressaceae
Genus – Thuja
Species – T. standishii

Character :–

1. थूजा सदाबहार पेड़ है।
2. इस होम्योपैथिक दवा का इस्तेमाल एक नहीं बल्कि अनेक रोगों कि में किया जाता है।
3. इसके पत्तियों और तेल को दवा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।
4. थूजा का इस्तेमाल स्किन के बैक्टेरिया, मुँहे के छाले और ब्रोंकाइटिस में भी करते है।
5. थूजा का इस्तेमाल केवल त्वचा के मस्से दूर करने के लिए किया जाता है।

Uses :–

1. मूत्रवर्धक मेडिसिन, कफोत्सारक के रूप में (कफ) और इम्यून बूस्टर की तरह (रोग प्रतिरोधक) किया जाता है।
2. कुछ लोग थूजा का यूज गर्भपात करने के लिए भी करते है।
3. गले की खराश में थूजा का उपयोग किया जाता है।
4. नाक की सूजन में थूजा का उपयोग।
5. किशोरों की होने वाली पीठ, गर्दन और कमर के मुहासों को दूर करती है।
6. श्वेत रक्त कोशिकाओं की कमी में थूजा का उपयोग किया जाता है।
7. त्वचा पर लाल-लाल चकतों की समस्या को दूर करती है।
8. नसों के होने वाले दर्द में।

Scanned with ACE Scanner

Roll No. ....

Serial No - 7

Botanical Name - Thuja standishii

Common Name - Japanese arborvitae

Family - Cupressaceae

Place of calletion - Sukma

Name of calletion - Chanchal Nag

Date of - 7-10-2022

Habit - Shrubs

Thuja Standishii (सोयनी)

Scanned with ACE Scanner

Roll No. ....

Serial No. - 8

Botanical Name - Hibiscus Rosa-Sinensis

Common Name - Japakusum

Family - Malvaceae

Place of collection - Sukma

Name of collection - chanchal nag

Date of collection - 2.10-2022

Habit - Shrubs

Hibiscus Rosa-Sinensis (गुड़हल)

Scanned with ACE Scanner

Division — Phanerogams
class - Dicotyledons
Sub-class - Polypetaledons
Orders — Malvales
Genus - Hibiscus
Species — Hibiscus Rosa-Sinensis

Charectar :-

1. हिबिस्कुस मेलो परिवार माल्वेसी मे फूलो के पौधो की एक प्रजाति है।
2. गुड़हल के फूलो से बनी चाय को दुनिया भर में कई नामो से जाना जाता है।
3. कई प्रजातियो को व्यापक रूप से सजावटी पौधो के रूप में खेती की जाती है।
4. पेय लाल रंग, तीखे स्वाद और विटामिन सी सामग्री के लिए जाना जाता है।
5. गुड़हल का फूल जितना ज्यादा आकर्षक और खूबसूरत होता है।

Uses :-

1. अधिकांशतः गुड़हल के फूल का इस्तेमाल पूजा-पाठ आदि कामो के लिए किया जाता है।
2. गुड़हल का फूल शरीर में एनीमिया की समस्या को दूर करता है।
3. वजन घटाने में मदद करता है।
4. एंटी एजिंग का काम करता है।
5. इसमें विटामिन सी, मिनरल, आयरन, फाइबर और एंटी आक्सीडेंट आदि भरपूर मात्रा में होते है।
6. सर्दी, जुकाम को दूर करने में भी बेहद उपयोगी है।
7. गले को आराम पहुचाने में उपयोगी है।

Scanned with ACE Scanner

Division - Phanerogams
Class - Dicotyledons
Sub-Class - Polypetalae
Order - Passiflorales
Genus - Momordica
Species - M. charantia

Charectars :-

(1) कुकुर्बिटासी परिवार का एक सदस्य विश्व के वातावरण में और उपनेडट बंधु के रूप में उपयुक्त होता है।
(2) यह फलों के रूप में परिवर्तित हो गया है।
(3) इस पौधे में प्रोटीन, फ्लेवोनोइड्स, बेविसाटिक और अन्य प्रकार के रसायन होते हैं।
(4) चरंतिया के रासायनिक घटकों का संबोधित करती है।

Uses :-

(1) करेले की ताजी पत्तियों को पीस कर माथे पर लगाने से सिरदर्द में आराम मिलता है।
(2) घाव ठीक करता है।
(3) करेले के रस को पीने से पथरी रोग ठीक होता है।
(4) करेला मुंह के छालों के लिए अचूक दवा है।
(5) करेले में फास्फोरस पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह कफ, कब्ज और पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करता है।
(6) पेट में गैस बनने और अपच होने पर करेले के रस का सेवन करना अच्छा होता है।
(7) करेले का जूस पीने से लीवर मजबूत होता है।

Scanned with ACE Scanner

Roll No. ....

Serial No. - 9

Botanical Name - Momordica charantia

Common Name - Momordica cymbalaria

Family - Cucurbitaceae

Place of colletion - Sukma

Name of collection - Chanchal Nag

Date of collection - 2-10-2022

Habit - Herbs

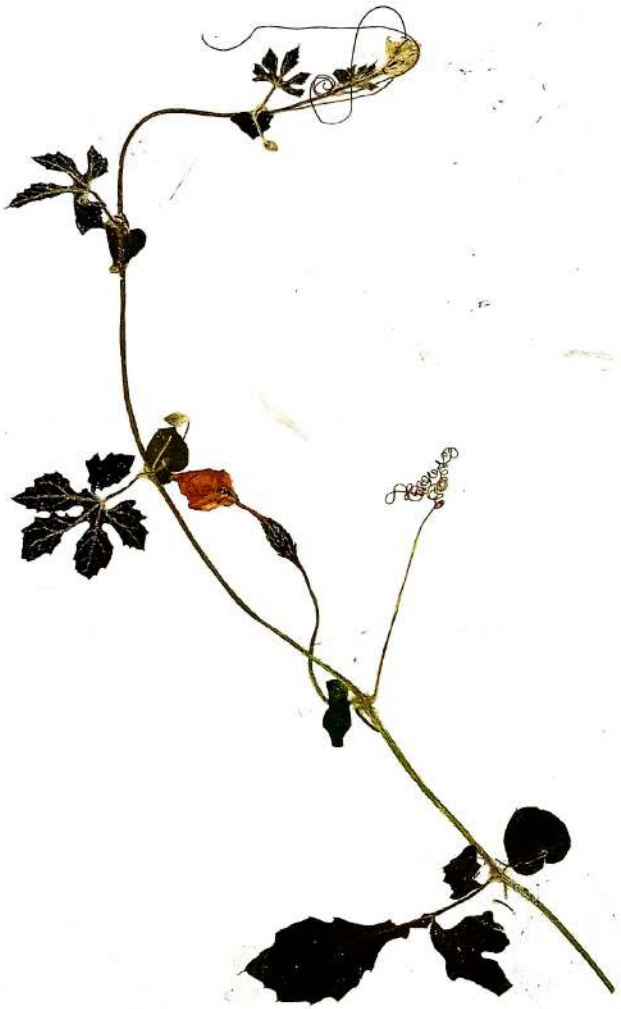

Momordica charantia (करेला)

Scanned with ACE Scanner

Roll No. ....

Serial No. - 10

Botanical Name - Murraya koenigii

Common Name - Bergera koenigii

Family - Rutaceae

Place of collection - Sukma

Name of collector - Chanchal Nag

Date of collection - 2-10-2022

Habit - Tree

Murraya koenigii (करीपत्ता)

Scanned with ACE Scanner

Classification -

Order - Sapindales
Family - Rutaceae
Genus - Murraya
Species - Koenigii

Character :-

1. मुरैना कोएनिगीजिसके पौधे के रूप में पाए जाते हैं।
2. करी पत्ता का प्रयोग भारतीय पकवानों में किया जाता है।
3. करी पत्ता को कटनीम, मीठा नीम, कैडर्य और गिरिनिम्ब जैसे कई नामों से जाना जाता है।
4. इस का कई सारे औषधीय गुण हैं।

Uses :-

1. करी पत्ता एक जड़ी-बूटी भी है।
2. यह सिरदर्द, मुंह के अनेक रोग में करी पत्ता के इस्तेमाल करते हैं।
3. यह दस्त, उल्टी, पेट दर्द, डायबिटीज इत्यादि में उपयोग करते हैं।
4. पाचन स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।
5. बालों को झड़ने से रोकता है कड़ी पत्ते बालों के झड़ने से लड़ने में मदद कर सकते हैं
6. एनीमिया का जोखिम कम करता है।
7. आंखों को तंदुरुस्त और पाचन तंत्र को तंदुरुस्त करने में। करी पत्ता मे पर्याप्त मात्रा में विटामिन A होता है।
8. विटामिन A आंखों के स्वास्थ्य के लिए जरूरी होती है।

Scanned with ACE Scanner

classification -

Order - Fabales
Genus - Cicer
Species - C. arietinum

Character :-

① चने की ही एक किस्म को काबुली चना या प्रचलित भाषा में छोले भी कहा जाता है।
② ये हल्के बादामी रंग के काले चने से अपेक्षाकृत बड़े होते हैं।
③ ये उत्तरी अफ्रीका, अफगानिस्तान और चिली में पाए जाते रहे हैं।
④ चना एक प्रमुख दलहनी फसल है।
⑤ यह सर्वाधिक उगाया जाने वाली प्रजाति है।
⑥ इसके पौधे छोटे हैं तथा इनमें शारवन अधिक होता है।

Uses :-

① चना की फसल की पौध एवं कोमल पत्तियाँ सब्जी के रूप में उपयोगी होती है।
② बीजों को पानी में भिगोकर, भूनकर एवं उबालकर खाया जाता है।
③ चने को छोले की सब्जी बनाकर खाया जाता है।
④ चना के बीज प्रोटीन (16-19%) से भरपूर होते हैं।
⑤ चने को भिगोकर कच्चा खाया जाता है जिससे शरीर तंदुरुस्त बनता है।
⑥ चने के अंकुरित बीज विटामिन A के अच्छा स्रोत होते हैं।
⑦ पौधों से प्राप्त मैलिक अम्ल का औषधीय उपयोग अमाशय के दर्द के उपचार में किया जाता है।

Scanned with ACE Scanner

Serial No - 11 Roll No. ....

Botanical Name – Cicer species

Common Name — Gram, chick pea

Family – Fabaceae

Place of collection - Sukma

Name of collection – chanchal Nag

Date of collection – 2-10-2022

Habit – Herbs

Cicer species (चना).

Scanned with ACE Scanner

Roll No. ....

Serial No. - 12

Botanical Name - Emblica officinalis

Common Name - Amla

Family - Euphorbiaceae

Place of collection - Sukma

Name of collection - Chanchal Nag

Date of collection - 3-10-2022

Habit - tree

Emblica officinalis (आँवला)

Scanned with ACE Scanner

Classification

Division – Phanerogams
Class – Dicotyledons
Sub-class – Monochlamydeae / Incompletae
Order – Unisexuales
Genus – Phyllanthus
Species – P. emblica

Characters :–

① आँवला एक फल देने वाला वृक्ष है। यह लगभग 20 फीट से 30 फुट तक लंबा भारतीय पौधा होता है।
② यह भारत के अलावा यूरोप और अफ्रीका में भी पाया जाता है।
③ इसके फल सामान्य रूप से छोटे होते हैं, लेकिन प्रसंस्कृत पौधे में थोड़े बड़े फल लगते हैं।
④ इसके फल हरे, चिकने और गुठलीदार होते हैं। स्वाद में इनके फल कसैले होते हैं।
⑤ इसके फूल घंटे की तरह होते हैं।

Uses :–

① आँवला के हरे तथा सूखे फल का उपयोग हस्त, पेचिश, मंदाग्नि रोग के इलाज हेतु किया जाता है।
② इसके फलों को अत्यधिक उबालकर सेवन करने से खसरा (measles) में लाभ होता है।
③ इसके फलों के किण्वन से प्राप्त सिरका, अपच, रक्तहीनता, पीलिया कुछ प्रकार के हृदय रोग तथा खाँसी – जुकाम में उपयोगी होता है।
④ आँवला के फल यकृत को शक्ति प्रदान करते हैं।
⑤ आँवला, हरी एवं बहेड़ा के साथ मिलाकर त्रिफला नामक दवा के रूप में सेवन करते हैं, जो कि यकृत के बढ़ जाने पर, बवासीर में, नेत्र तथा उदर विकारों में बहुत उपयोगी होता है।

Scanned with ACE Scanner

Classification –

Order – Sapindales
Family – Meliaceae
Genus – Azadirachta
Species – A. indica

Character :–

① इसका वानस्पतिक नाम Azadirachta indica है। नीम का वानस्पतिक नाम इसके संस्कृत भाषा के निंब से व्युत्पन्न है।
② नीम भारतीय मूल का एक पर्ण पाती वृक्ष है।
③ यह अधिकांश से समीपवर्ती देशों – बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, थाईलैंड आदि देशों में पाया जाता रहा है।
④ नीम एक तेजी से बढ़ने वाला पर्णपाती पेड़ है, जो 15–20 मी. की ऊंचाई तक पहुंच सकता है।
⑤ तना अपेक्षाकृत सीधा और छोटा होता है।

Uses :–

① शुगर को दूर रखने में उपयोगी है।
② कान दर्द में अगर आपके कान में दर्द रहता है तो नीम का तेल इस्तेमाल करना काफी फायदेमंद होता है।
③ मलेरिया के इलाज में उपयोग किया जाता है।
④ त्वचा, पेट, आंखें और विषाक्त जनित समस्याओं में इसका प्रयोग अद्भुत होता है।
⑤ इसकी पत्तियों से लेकर इसके बीज तक सब कुछ अत्यंत उपयोगी होते हैं।
⑥ बालों के लिए भी है फायदेमंद।

Scanned with ACE Scanner

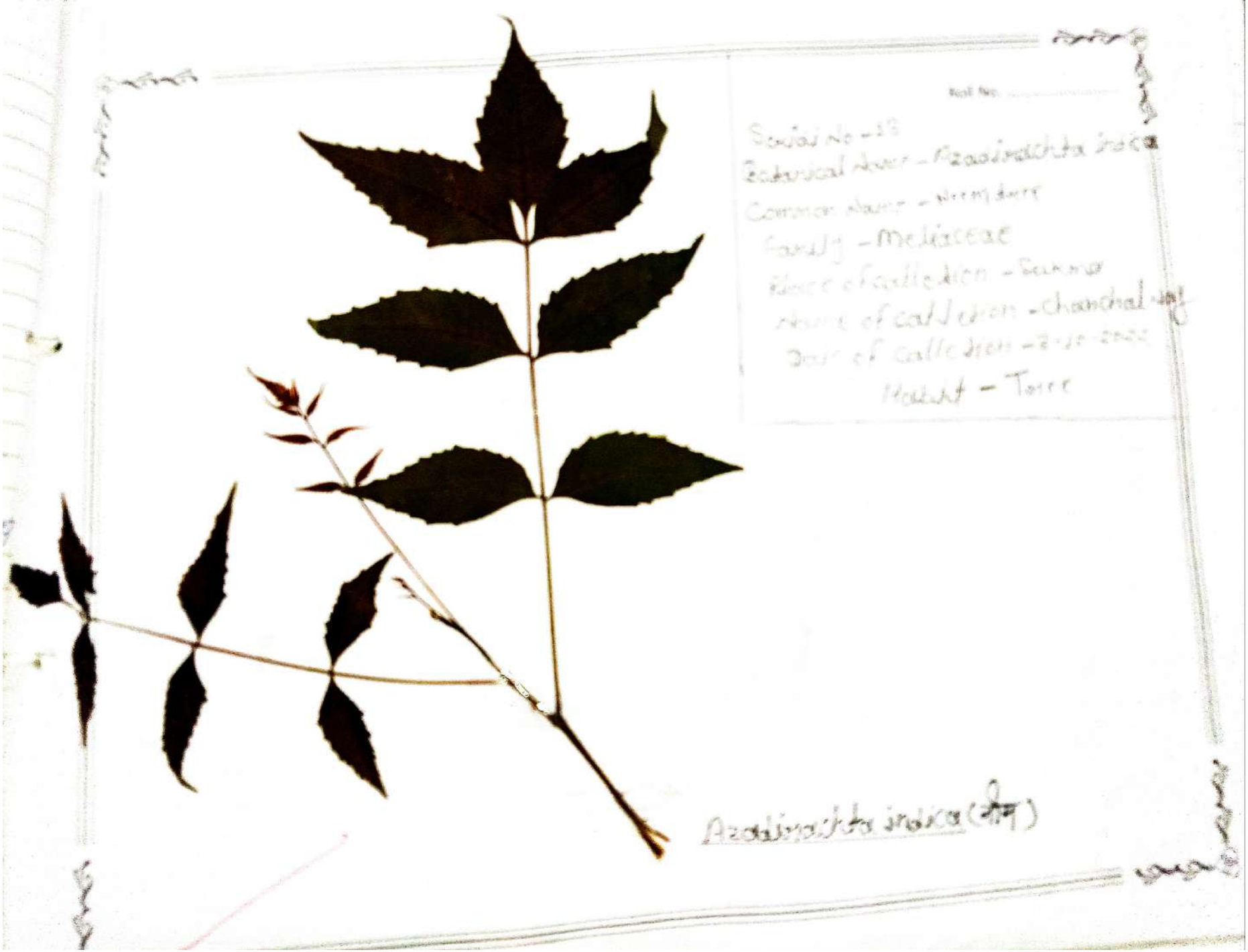

Scanned with ACE Scanner

Roll No. .....

Seedi No - 14

Botanical Name - Punica granatum

Common Name — Pomegranate

Family — Lythraceae

Place of collection - Sukma

Name of collection — chanchal Nag

Date of collection — 3-10-2022

Habit — Tree

Punica granatum (अनार)

Scanned with ACE Scanner

classification —

Order — Myrtales
Family — Lythraceae
Genus — Punica
Species — P. granatum

Character :—

① अनार अथवा दाड़िम एक फल है यह कुसुम्बी / लाल रंग का होता है।
② इसमें सैकड़ों लाल रंग के छोटे पर रसीले दाने होते हैं।
③ अनार विश्व के गर्म देशों में पाया जाता है स्वास्थ्य की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण फल है।
④ सबसे पहले अनार के बारे में रोमन ऋषियों ने पता लगाया था।
⑤ अनार के सुंदर व छोटे आकार के होते हैं।
⑥ इसके पेड़ पर फल आने से पहले लाल रंग का बड़ा फूल लगता है, जो हरी पत्तियों के साथ बहुत ही सुंदर दिखता है।

Uses :—

① अनार में प्रचुर मात्रा में लाभदायक प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, विटामिन और खनिज पाए जाते हैं।
② इसके बीजों से निकले तेल का प्रयोग औद्योगिक क्षेत्र में किया जाता है।
③ अनार रक्तसंचार वाली बीमारियों से लड़ता है। उच्च रक्तचाप को घटाता है।
④ सूजन और जलन में राहत पहुंचाता है, गठिया और वात रोग की संभावना घटाता और जोड़ों में दर्द कम करता है।
⑤ अनार को त्वचा के कैंसर, स्तन कैंसर, प्रोस्टेट ग्रंथि के कैंसर और पेट में अल्सर की संभावना घटाने की दृष्टि से भी विशेष उपयोगी पाया गया है।

Scanned with ACE Scanner

Roll No. .....

Seedi No - 16
Botanical Name - Curcuma longa
Common Name -
Family - Zingiberaceae
Place of collection - Sukma
Name of collection - Chanchal Nag
Date of collection - 10-10-2022
Habit - Herb

Curcuma longa (हल्दी)

Scanned with ACE Scanner

Classification -

Order – Zingiberales
Family - Zingiberaceae
Genus - Curcuma
Species - C. longa

Character :-

① हल्दी को आयुर्वेद में प्राचीन काल से ही एक चमत्कारिक द्रव्य के रूप में मान्यता प्राप्त है।
② हल्दी एक फूल वाला पौधा है।
③ यह पौधा भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया का मूल निवासी एक बारहमासी, प्रकंद, शाकाहारी पौधा है।
④ पौधों का प्रत्येक वर्ष उनके प्रकंदों के लिए एकत्र किया जाता है।
⑤ आयुर्वेद में हल्दी को एक महत्वपूर्ण औषधि कहा गया है।
⑥ भारतीय रसोई में इसका महत्वपूर्ण स्थान है और धार्मिक रूप से इसको बहुत शुभ समझा जाता है।

Uses :-

① मधुमेह के लिए हल्दी के फायदे होते है।
② लिवर डिटॉक्स करने के लिए हल्दी के फायदे होती है।
③ पाचन के लिए हल्दी का उपयोग में होता है।
④ इससे जुकाम, खांसी, से ठीक होता है।
⑤ हल्दी के सेवन से रक्त शुद्ध होता है। इसके सेवन से रक्त में मौजूद विषैले तत्व बाहर निकल जाते है।
⑥ इससे शरीर के दर्द, पेट के रोग, त्वचा से छुटकारा पा सकते है।

Scanned with ACE Scanner

Classification –

Order – Laurales
Family – Lauraceae
Genus – Cinnamomum
Species – C. tamala

Character :—

1. तेज पत्ता के लोरेल के एक सुगंधित पत्ते को संदर्भित करता है।
2. ताजा या सूखे तेज पत्तों को उनके विशिष्ट स्वाद और खुशबू के लिए खाना पकाने में इस्तेमाल किया जाता है।
3. ताजा पत्ते बहुत मंद होते हैं और तोड़े जाने और कई हफ्तों तक सुखाये जाने तक वे अपना पूरा स्वाद विकसित नहीं कर पाते हैं।
4. तेज पत्ते के अर्क में एंटीऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं।
5. तेज पत्ते में विटामिन A और C होता है।

Uses :—

1. तेजपत्ता का इस्तेमाल उच्च रक्त शर्करा, माइग्रेन सिर दर्द, बैक्टीरियल और फंगल संक्रमण के इलाज में उपयोगी होते हैं।
2. सिर दर्द के लिए एक हर्बल उपचार के रूप में तेज पत्ते का इस्तेमाल किया गया
3. तेज पत्ता शारीरिक इन्सुलिन प्रक्रिया में शामिल कुशलता को उपयुक्त होता है
4. इसका इस्तेमाल पेट के विकार के लक्षण को कम करने के लिए किया जा
5. तेज पत्ता कैंसर-विरोधी और जीवाणु-विरोधी भी होता है और इसका इस्तेमाल गठिया, बालों और पेट दर्द के इलाज के लिए किया जा
6. इसमें विटामिन A और C पाया जाता है।

Scanned with ACE Scanner

Roll No. .....

Seridi No - 17

Botanical Name - Cinnamomum ta

Common Name - Indian bark

Family - Lauraceae

Place of collection - Sukma

Name of Collection - 12-10-202

Date of collection - Chancha

Habit - Tree

Cinnamomum tamala (तेजपत्ता)

Scanned with ACE Scanner

Roll No. ....

Serial No - 18
Botanical Name - Rosa Rubiginosa
Common Name - Rose
Family - Rosaceae
Place of calletion - Sukma
Name of catledion - Chanchal Nag
Date of calledion - 14-10-2022
Habit - Shrubs

Rosa Rubiginosa (गुलाब)

Scanned with ACE Scanner

Classification –

Division – Phanerogams
Class – Dicotyledons
Sub-Class – Polypetalae
Order – Rosales
Family – Roseceae
Genus – Rosa
Species – Rubiginosa

Character :–

1. इसके फूल आकार और आकार मे भिन्न होते है।
2. इसके तने अक्सर तेज कांटो से लैस होते है।
3. कई समाजो मे गुलाबो ने सांस्कृतिक महत्व हासिल कर लिया है।
4. गुलाब के पौधे आकार मे कॉम्पैक्ट, लघु गुलाब से लेकर पर्वतारोही तक होते है।
5. विभिन्न प्रजातियाँ आसानी से संकरित हो जाती है और इसका उपयोग बगीचे के गुलाबो की विस्तृत श्रृंखला के विकास मे किया गया है।

Uses :–

1. गुलाब का फूल मुंह संबंधी रोगो से निजात दिलाता है।
2. पेट की खराबी, गले मे खराश, सर्दी और रजोनिवृति के दौरान भी उपयोग किया जाता है।
3. यह सिर मे होने वाले घावो को भी ठीक करता है।
4. ट्यूबरक्लोसिस यानी टी.बी. के इलाज मे भी यह लाभकारी होता है।
5. यह मुंह के छाले को भी ठीक करता है।

Roll No. ....

Serial No - 19
Botanical Name - Oryza Sativa
Common Name - DHAN
Family - Poaceae
Place of collection - Sukma
Name of collection - chanchal Nag
Date of collection - 17-10-2022
Habit - Herb

Oryza Sativa (धान)

Classification –

Kingdom - Plantae
Order - Poales
Family - Poaceae
Genus - Oryza
Species - O. Sativa

Character :–

1. ओरीजा सैटिवा, जिसे आमतौर पर एशीयाई चावल के रूप मे जाना जाता है।
2. पौधों की प्रजाति है जिसे आमतौर पर अंग्रेजी मे चावल के रूप मे जाना जाता है
3. यह खेती वाले चावल का प्रकार है जिसकी खेती विश्व स्तर पर सबसे आम
4. ओरीजा सैटिवा घास परिवार पोएसी के जीनस ओरीजा से संबंधित है।
5. यह आनुवांशिक रूप से संशोधित करने मे आसान होने के लिए प्रसिद्ध है और अनाज की वनस्पति विज्ञान के लिए एक मॉडल जीव है।

Uses :–

1. चावल का धान पेट के लिए काफी लाभकारी होता है।
2. धान के लावा का सेवन करने से उल्टी बंद होती है
3. गठुवन मे जोड़ो के दर्द निवारण और त्वचा मे त्वचा संबंधी समस्याओं के निवारण के गुण है।
4. हिन्दू त्योहारो विशेषकर नागपंचमी और दीपावली के अवसर पर यह लावा पूजा मे प्रयुक्त होता है।
5. हिन्दू विवाह संस्कार मे धान को भूनकर उसके लावा से लाजाहोम करते है। विवाह मे होने वाले सात फेरो मे भाई हर फेरे के बाद धान का लावा डालता है

HERBARIUM

PAPER

Name ~~K. Urmila~~ Anil. Kumar

Class B.Sc. II year Section

Roll No. 5463

School

Scanned with ACE Scanner

INDEX

	Name / Biological Name	Subject	Topic	Date Of Collection
01.	Brassica Campestrais	Botany	सरसों	01/10/2022
02.	Hibiscus rosa sinensis	—"—	गुड़हल	04/10/2022
03.	Coriandrum sativum	—"—	धनिया	30/10/2022
04.	Ocimum Sanctum	—"—	तुलसी	01/11/2022
05.	Allium cepa	—"—	प्याज	03/11/2022
06.	Apocynaceae	—"—	सदाबहार	05-11/2022
07.	Rosa rubiginosa	—"—	गुलाब	07-11-2022
08.	Ghrit kumari	—"—	एलोवेरा	09-11-2022
09.	Tagetes	—"—	गेंदा	10/11/2022
10.	Azadirachta	—"—	नीम	12-11/2022
11.	Emblica	—"—	आंवला	14-11-2022
12.	Citrus aurantifolia	—"—	नींबू	16-11-2022
13.	Dolichos lablab	—"—	सेमी	17-11-2022
14.	Murraya Koenigii	—"—	करी पत्ता	19-11-2022
15.	Oryza sativa	—"—	धान	22-11-2022
16.	Acacia arabica	—"—	बबूल	24-11-2022
17.	Cicer arietinum	—"—	चना	27-11-2022
18.	Indian Sorrel		खट्टी भाजी	28-11-2022

Scanned with ACE Scanner

सरसों (Mustard)

Classification -

वर्ग (class) → डाइकोटिलीडनी (Dicotyledonae)

गण - (order) → पेराइटेल्स (parietales)

कुल - family) → ब्रेसीकेसी (Brassicaceae)

श्रेणी - (Series) → थैलेमीफ्लोरी (Thalamiflorae)

उपयोग (u (1) सरसों के बीज का तेल के रूप में उपयोग किया जाता है।

(2) सरसों का तेल का उपयोग डेंगू बुखार में भी उपयोग

(3) इसका उपयोग स्थानीय लोग बाजी बनाकर भी खाते

(4) सरसों का बीज का पाउडर बनाकर मूत्र गडबड़ी में उ किया जाता है।

(5) पौधे की जड़ो और पत्तियों का उपयोग पेट के दर्द में

(6) इसका उपयोग तेल खाना, अचार, साबुन तथा ग्लिसराल काम आता है।

Scanned with ACE Scanner

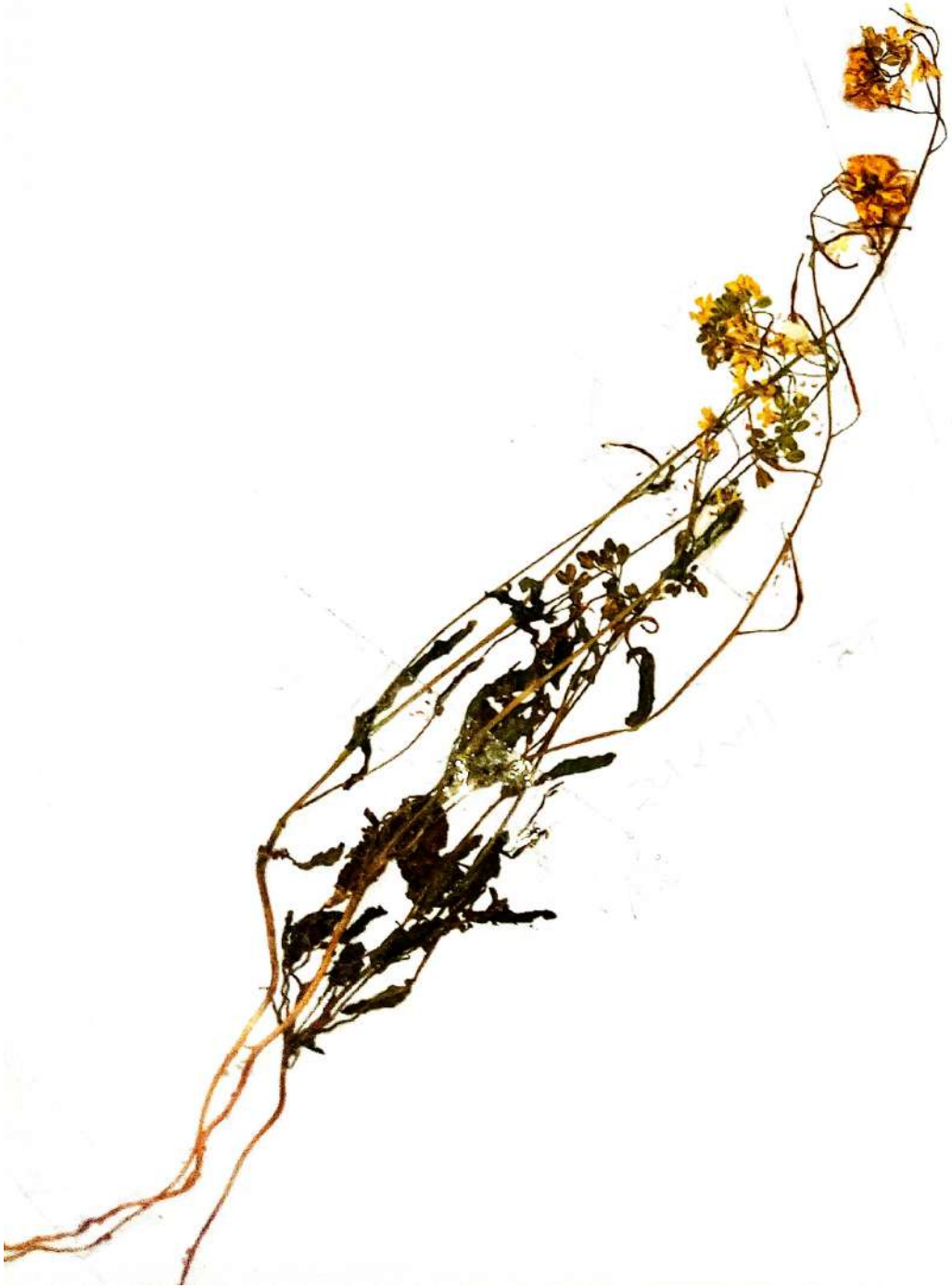

Serial No. — 01
Botanical Name — Brassica Campestris
Common Name — sarso
Family — Brassicaceae
Place of Collection — Sukma
Date of Collection —
Habit — Annual Herb

Scanned with ACE Scanner

Roll No.: ....

Serial No. — 02

Botanical Name — Hibiscus sinen...

Common Name — Ch...

Family — malva...

Date —

Collection — sukn...

Habit — perennial

Scanned with ACE Scanner

(Class) ⟶ डाइकोटिलीडनी (Dicotyledonae)
(sub-class) ⟶ पॉलीपेटली (polypetalae)
(Series) ⟶ थैलेमीफ्लोरी (Thalamiflorae)
(order) ⟶ माल्वेल्स (malvales)
(family) ⟶ माल्वेसी (malvales)
⟶ हीबिस्कस लिनिमस

योग ⟹ (1) गुड़हल के पत्ते का उपयोग चेहरे की झुर्रियों मुंहासों और दाग-धब्बों को ठीक करने में काम आता है।

(2) गुड़हल की फूलों का उपयोग ज्यादातर पूजा त्योहार में किया जाता है

(3) इसका फूल लाल रंग की होती है।

(4) गुड़हल के फूल को सुबह खाली पेट सेवन करने से वजन कम होता है।

(5) गुड़हल मालवेसी परिवार से संबंधित एक फूलों वाला पौधा है।

(6) गुड़हल का फूल स्वास्थ्य और सुन्दरता के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण है।

Scanned with ACE Scanner

Class → द्विबीजपत्री
sub-class → पॉलीपेटली
series → केलिसीफ्लोरी
order → अम्बेलेल्स
family → एपीएसी

उपयोग →

(1) धनिया का उपयोग अधिकतर सब्जीयो कि मे डालने का काम आता है।

(2) इसका तना खोखला होता है।

(3) धनिया का पत्तिया ज्यादा कटी-फटी होती है।

(4) धनिया को ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने के लिए भी उपयोग जाता है।

(5) धनिया का उपयोग किडनी रोग के लिए भी असरदार होती है।
इसका उपयोग पाचन शक्ति बढाने के लिए भी होता है।

(6) ~~ईसके~~ घर से मिला।

Scanned with ACE Scanner

Roll No.: ....

Serial No. — 03
Botanical Name — Coriandrum sativ
Common Name — coriandrum
family — Apiaceae
Date —
Place
Collection - sukma
Habit — annual aromatic herb

Scanned with ACE Scanner

Roll No.: ....

Serial No. — 04

Botanical Name - Ocimu
sanct

Common Name - Tulsi

family - Lamia

Date -

Collection - Suk

Habit - annual or pe
herb

Scanned with ACE Scanner

(तुलसी)

ss → Dicotyledonae (द्विबीजपत्री)
class → Gamopetalae (गेमोपेटली)
es → Bicarpellatae (बाइकार्पेलेटी)
lea → Lamiales (लेमिएल्स)
ily → Lamiales (लेमिएसी)

योग →

(1) तुलसी पौधा का पौधा होता है।

(2) तुलसी का फूल भी होता है

(3) इसे घरों मे लगाया जाता है

(4) तुलसी को ज्यादातर पूजा के लिए उपयोग किया जाता है

(5) तुलसी के पत्तों का उपयोग सर्दी-खांसी के लिए भी उपयो किया जाता है।

(6) मुँह की दुर्गंध को दूर करने के लिए भी उपयोग होता है।

(7) रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए भी उपयोग होती है।

(8) दस्त होने पर भी उपयोग किया जाता है।

Scanned with ACE Scanner

Family — Liliaceae
Class — monocotyledonae
sub-class → Coronarieae
Order → Asparagales
Genus → Allium
Species → A. Cepa

उपयोग :— 1) प्याज का उपयोग मूल रूप से सब्जी बनाने उपयोग किया जाता है।

2) प्याज को कच्चा भी खा सकते है

3) प्याज का खेत किया जाता है और इसका कई प्रकार जैसे की पीला प्याज, मीठा प्याज, सफेद प्याज, लाल प्याज आदि

4) इसे खेती से प्राप्त किया गया है।

5) प्याज का उपयोग ज्यादातर सब्जीयो में होता है।

6) प्याज एकवर्षीय शाक है

Scanned with ACE Scanner

Scanned with ACE Scanner

Roll No.: ....

Serial No. – 06
Botanical Name - Apo
Common Name - Sad
Family – Catharan
roseus
Date –
Collection - Sad
Habit – perennial

Scanned with ACE Scanner

(सदाबहार)

...ssification -

...on — Phanerogams
... — Dicotileclears
...class — Gamopetalae
...r — Gentianales
...us —
...ries — Bicarpellatae

Character — 1> वैसे तो यह झाड़ी इतनी सदाबहार है कि बिना देखभाल किए भी फूल खिलती है।

2> ये फूल न केवल सुन्दर और आकर्षक होता है,

3> यह पौधा सिर्फ आपके गार्डन की शोभा ही नहीं बढ़ता बल्कि कई रोगों से छुटकारा भी दिलाता है।

4) इसे कई देशों में अलग-अलग नामों से भी जाना जाता है।

5) यह एक झाड़ीनुमा पौधा है।

6) इसका फूल गुलाबी, फालसई, जामुनी आदि रंगों का होता है।

7) सदाबहार की जड़ों में रक्त शर्करा को कम करने का गुण होता है

Scanned with ACE Scanner

Classification

Division — Tracheacyte
Class — Angiespermopsida
Order — Rasifes
Genus — Rosa
Sines — Grnina

Character :-

1) गुलाब एक बहुवर्षीय फूल है। यह झाड़ीदार, कटीला, पुष्पीय पौधा है।

2) यह बहुत सुन्दर व सुगंधित फूल होता है।

3) गुलाब का 100 से भी ज्यादा जातियाँ पायी जाती है।

4) गुलाब के फूलों का लोग बहुत प्रिय है।

5) गुलाब की पत्तियों में प्राकृति ठंडक होती है इसका इस्तेमाल सौन्दर्य उबटन के लिए किया जाता है।

Scanned with ACE Scanner

Roll No.: .....

Serial No. 07

Botanical Name - Rosa Rubiginosa

Common Name - Rosa

family - Rosaceae

Collation - Sikkim

Habit - perennial herb

Scanned with ACE Scanner